QUARTERLY NEWSLETTER OF ARYA SAMAJ INDIRANAGAR

Swami Dayananda Saraswati

Vaidic Dhwani

VOL 10 # 2

EDITION 37

APRIL-JUNE 2019

CONTENTS

Editorial 2
Pravachans 2
ईश्वर के पूर्ण 'वेदज्ञान' से दूर करें अज्ञान 3
Junior Arya Samaj 5
ईश्वर की प्रार्थना व उपासना 6
Rituals Vs Spirituality 8
"मेरी होली मेरा गीत" 11
Arya Samaj and Hinduism 12
The General Body Meeting 14
Varshikotsav 2019 15

ओ३म्
Arya Samaj For Vaidic Dharma

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

Krinvanto Vishvam Aryam

Make this world noble

प्रभु के रक्षण के निराले ढङ्ग

महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः ।
नास्य क्षीयन्त ऊतयः ॥

– ऋ० ६ । ४५ । ३

विनय – मैं क्या बतलाऊँ प्रभु किन-किन अद्भुत ढङ्गों से मनुष्य को उन्नत कर रहे हैं । जब मनुष्य रोता और पीटता रहता है, जब उसके अन्दर ऐसे युद्ध चल रहे होते हैं कि उसे विफलता-पर-विफलता ही मिलती जाती है, पीछे से पता लगता है कि उस समय में, उन्हीं दिनों में उसने अपनी उन्नति का बड़ा रास्ता तै कर लिया होता है । मनुष्य प्रभु की कल्याणमयी घटनाओं को नहीं समझ पाता कि उन घटनाओं से कभी-सुदूर भविष्य में उसका कल्याण कैसे सधेगा । प्रभु के उन्नत करने वाले मार्ग इतने महान् और विशाल हैं कि अल्पदृष्टि मनुष्य उन्हें पूर्णता में कभी नहीं देख सकता, अतएव वह कल्याण की ओर जाता हुआ भी घबराया रहता है । प्रत्येक मनुष्य अपनी-अपनी प्रकृति-स्वभाव के अनुसार अपने-अपने निराले ढङ्ग से उन्नत व विकसित हो रहा है । जब मनुष्य अपने ही उन्नति-मार्ग को नहीं समझ पाता तो उसके लिए दूसरे मनुष्यों के विकास का दावा भरना कितना कठिन साहस है ! उस अदम्य लीला वाले प्रभु की जिस 'प्रणीति' से जिस व्यक्ति ने उन्नति पायी होती है वह व्यक्ति उसी रूप में उस प्रभु के गीत गाता फिरता है । इस तरह अनादिकाल से मनुष्य नाना प्रकार से उसकी प्रशस्तियाँ गाते आ रहे हैं और गाते रहेंगे । मनुष्य उसकी स्तुतियों का कैसे पार पाएँ ? भक्त पुरुष तो उस प्रभु की रक्षाओं का-रक्षा के प्रकारों का ही अन्त नहीं देखता । प्रभु की रक्षण-शक्ति कभी क्षीण नहीं होती । वहाँ से रक्षणों का एक ऐसा सनातन प्रवाह बह रहा है कि वह सब मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट-पतङ्गों की, सब स्थावर और अस्थावर जगत् की, एक ही समय में अकल्पनीय प्रकारों से रक्षा कर रहा है । मनुष्य अपने पिछले कुछ अनुभवों के आधार पर सोचता है कि ऐसा होने से मेरी रक्षा हो जाएगी, अतः वह वैसा ही होने की प्रार्थना करता है और वैसी ही आशा करता है, परन्तु इस बार प्रभु एक बिल्कुल नये मार्ग से रक्षा करके मनुष्य को आश्चर्यचकित कर देते हैं । एवं, नये-से-नये अकल्पनीय ढङ्गों से मनुष्य को प्रभु का रक्षण मिलता जाता है, तब पता लगता है कि प्रभु संसार का सब प्रकार से कल्याण ही कर रहे हैं । हम मानें या न मानें, पर वे तो हमें मारते हुए भी हमारी रक्षा कर रहे हैं । अहो, देखो उस प्रभु के उन्नति-मार्ग महान् हैं, उसकी रक्षा के प्रकार अनन्त हैं, जानने वाला सब संसार उसकी स्तुतियाँ-ही-स्तुतियाँ गाता है ।

Vast are His designs, manifold are His Praises and His protections are never withdrawn

- Swami Satya Prakash Saraswati
- SatyakamVidyalankar

Editorial

अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।
नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

– ऋ० ६ । ४५ । ३

This mantra of Sam Ved is a condensed energy. It carries a tremendous force preaching us to make our heart His throne and pray to God for the upliftment of our soul and be aware of His presence. Being aware is to imbibe wisdom through actions and knowledge, thus converting it into an empowering and enriching belief. It also implies listening to the inner voice, thereby, dedicating oneself only to noble actions and noble thoughts without deviations. Mere thinking is not enough; it has to include action. Action, further includes three things i.e. Stuti, Prarthana and Upasana. Stuti means giving a thought to His qualities, which are His permanent features. The moral derived is to make those qualities an inseparable part of our conduct and that would be real awareness and real Stuti. Next comes Prarthana or prayer. Prarthana is to be done only after making the best of one's efforts. It is the most important characteristic to imbibe in life, as it also makes us humble. It is said that fortune also favors the brave. And while we pray, we must surrender to Him completely. To be brief and precise, let us put in to practice all that we have learnt and prayed for and that is real Upasana. Being truly aware of His presence is doing true worship. God and only God is the object of worship. He being 'Hota', 'सर्वदा', 'सर्वथा', 'सर्वतः', blesses us with the best of everything and at the same time teaches us to share with others only that which is the best.

– Harsh Chawla

Pravachans

Smt Jyoti Khemani

Sh Ashish Shrivastav

Sh Ravi Bhatnagar

Smt Swati Gupta

Smt Nidhi Chawla

Smt Usha Shastri

ईश्वर के पूर्ण 'वेदज्ञान' से दूर करें अज्ञान

– डॉ. अरुण देव शर्मा

संसार में ज्ञान ही हमारे समस्त कर्मों व सुख-दुःख का आधार है। संसार में ज्ञान से पवित्र कोई वस्तु नहीं है। हम जो कुछ भी सोचते, बोलते व करते हैं, उसका आधार हमारा ज्ञान ही होता है। जैसा हमारा ज्ञान होता है, वैसे ही हम विचार, व्यवहार और कर्म करते हैं। फिर उनके अनुरूप हम अनेक सुख-दुःख का भोग करते हैं। जितना हमारा ज्ञान सत्य होगा उससे उतने ही उत्तमोत्तम कर्म हम कर सकते हैं। यदि हमारा ज्ञान सच्चा नहीं है, उसमें अनेक भ्राँन्ति, संशय, राग-द्वेष, दुराग्रह, पक्षपात आदि दोष हैं तो यें सभी दोष हमारे कर्मों को भी दूषित करेंगे और हमारे कर्मों में भी प्रदर्शित होंगे। फिर उनका फल सुख नहीं होता, दुःख ही होता है। इसलिए सबसे पहले हमें अपने ज्ञान को शुद्ध करने की जरुरत है।

किसी भी वस्तु को सुधारने, संवारने के लिए सबसे पहले उसकी बिगड़ी हालत को देखना होता है कि वह कैसी स्थिति में है ? बिना देखे हम इस दुनिया की किसी भी वस्तु को नहीं सुधार सकते। यदि हम अपने ज्ञान को देखें तो वह सारा का सारा ज्ञान हमारा अपना नहीं है। उसमें कुछ सोच-समझ या राय-विचार हमारे हो सकते हैं, बाकी तो वह ज्ञान हमारे परिजन, गुरुजन व समाज से ही हमें मिला होता है। जिसमें उनके अपने विचार भी जुड़े होते हैं। हमारा ऐसा ही मिश्रित ज्ञान है। वह हमारे तथा अन्यों के सत्य-असत्य, विद्या-अविद्या, भ्राँति-संशय, राग-द्वेष आदि गुण-दोषों से युक्त होता है। इस प्रकार हमारे ज्ञान में अनेक गुण-दोष होते हैं, जो सामान्यतया हमें दिखाई नहीं देते। बिना अपने ज्ञान एवं विचारों को जाने-पहचाने उन्हें कोई शुद्ध नहीं कर सकता।

हम सब व्यक्ति एक समय में किसी एक ही स्थान विशेष में रहते हैं। जिससे हम सब चीजों को थोड़ा-सा ही जान पाते हैं। हम एकदेशी होने से अल्पज्ञ हैं। इसलिए हममें से किसी भी व्यक्ति का ज्ञान १०० प्रतिशत शुद्ध व पूर्ण नहीं है। ऐसा ज्ञान तो केवल परमात्मा में ही है। ईश्वर का ही ऐसा पूर्ण ज्ञान क्यों है ? क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा है। जिससे वह सब पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को जानता है। वह सर्वज्ञ होने से ही पूर्ण ज्ञानी है। इसमें एक योगसूत्र प्रमाण है –

तत्र निरतिशयं सर्वज्ञबीजम् ।

– पातञ्जल योगशास्त्र १.२५

अर्थात् जिससे अधिक और न हो, ऐसा उस ईश्वर में सबसे अधिक सर्वज्ञता का बीज (ज्ञान) है।

ईश्वर में सर्वाधिक ज्ञान है, उसके समान या उससे अधिक ज्ञान किसी भी व्यक्ति व वस्तु में नहीं है। ईश्वर सर्वत्र होने से ही सर्वज्ञ सिद्ध हो रहा है। हम ईश्वर के समान या उससे अधिक कभी पूर्णज्ञानवान् नहीं हो सकते और प्रकृति भी जड़ होने से अज्ञ ही है। हम किसी पदार्थ-विशेष के तो विशेषज्ञ हो सकते हैं किन्तु ईश्वर तो सब पदार्थों का साक्षात् ज्ञाता होने से सबको पूर्णरूप से जान रहा है। ऐसे सर्वज्ञ परमेश्वर का ज्ञान और हम सब व्यक्तियों का ज्ञान सर्वथा भिन्न है। हम उसे नहीं जानते किन्तु वह तो सब जड़-चेतन पदार्थों में रहता हुआ सब कुछ जान रहा है –

ईशा वास्यमिदꣳसर्वम् ।

– यजुर्वेद ४०.१

अर्थात् ईश्वर सबमें वास कर रहा है।

सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्यों को ज्ञान देने वाला जब कोई मनुष्य नहीं था। तब उन आदि मनुष्यों को ईश्वर ने ही अपना वेदज्ञान दिया था। विकासवादी तो क्रमिक-विकास के साथ मनुष्यों के ज्ञान पाने की बात करते हैं। किन्तु मनुष्य बिना कुछ सिखाए, स्वयं खड़ा नहीं हो सकता, चल नहीं सकता, कुछ बोल नहीं सकता और न कुछ विशेष कार्य कर सकता है। मनुष्य का अधिकांश ज्ञान नैमित्तिक होता है, स्वाभाविक तो बहुत कम होता है। जबकि अन्य पशु-पक्षी आदि प्राणियों का स्वाभाविक ज्ञान हमसे बहुत अधिक होता है। जैसे गाय का बछड़ा जन्म के तुरन्त बाद ही उठकर खड़ा हो जाता है, दौड़ने व तैरने भी लगता है, जबकि वैसे हम मनुष्य कभी नहीं होते। इससे हम मनुष्यों का प्रथम गुरु परमेश्वर ही सिद्ध होता है। जब ईश्वर इतनी बड़ी सृष्टि को उत्पन्न कर सकता है तो मनुष्यों को अपना वेदज्ञान देना उसके लिए कौन-सा कठिन काम है ?

जैसे माता-पिता-गुरु आदि अपने बच्चों के लिए भोजन, वस्त्र, मकान आदि सभी साधन जोड़ते हैं। फिर उन्हें अपनी मातृभाषा में कुछ ज्ञान भी देते हैं। वैसे ही हमारे सब जन्मों का माता-पिता व गुरु परमेश्वर है। जिसने हमारे लिए पहले सृष्टि को उत्पन्न किया। फिर उसने हम मनुष्यों को अपनी संस्कृत 'वेदभाषा' में अपना सर्वोत्तम 'वेदज्ञान' दिया था। 'वेदज्ञान' सर्वोत्तम इसलिए है क्योंकि यह सर्वज्ञ सृष्टिकर्त्ता ईश्वर का ज्ञान है। जिसमें कोई त्रुटि या भूल नहीं है। यह ईश्वर का ज्ञान होने से पूरी तरह शुद्ध व पूर्ण है। त्रुटि या भूल तो हम अल्पज्ञ मनुष्यों के ज्ञान, विचार, वाणी व कर्मों में होती है, ईश्वर में कभी नहीं।

अल्पज्ञ मनुष्य कुछ भी जानने, मानने, बोलने व करने में स्वतन्त्र है। वेदों को न जानने से उसका बहुत सारा ज्ञान ईश्वर तथा वेदों से विरुद्ध होता है। जिससे व्यक्ति अविद्या, हिंसा, झूठ, राग-द्वेष, पक्षपात, अपराध आदि दोष-अधर्मयुक्त हो जाता है। किन्तु जब वह सत्संग, स्वाध्याय और साधना करता है तब वह विद्या, अहिंसा, सत्य, न्याय, सेवा, परोपकार आदि धर्म के लक्षणयुक्त होता है।

आज संसार में अनेक ईश्वर एवं वेदविरुद्ध मत-मजहब, सम्प्रदाय और अन्धविश्वास प्रचलित हो गए हैं। जिनमें पूरा मानव-समाज विभिन्न समुदायों में बँट गया है। सबने अपने-अपने सम्प्रदाय का प्रचलन करने वाले किसी एक प्रमुख व्यक्ति को ही ईश्वर या उसका दूत, पैगम्बर मान लिया है। और वें सब अपने-२ किसी व्यक्ति-विशेष की बातों को, वाणी व मान्यताओं को ही ईश्वर का ज्ञान मानने लगे हैं। जो कि सर्वथा सत्य नहीं है। हम किसी व्यक्ति विशेष को चाहे कितना भी बड़ा बुद्धिमान्, विद्वान्, धनवान् व दाता आदि मान लें किन्तु परमेश्वर से किसी भी व्यक्ति या वस्तु की तुलना कभी नहीं हो सकती। क्योंकि ईश्वर के समान कोई ज्ञानवान्, बलवान्, धनवान् व दानी आदि नहीं है। उस एक पूर्णज्ञानवान् भगवान् 'ओ३म्' ने अपना पावन वेदज्ञान हम सब मनुष्यों के लिए सृष्टि के प्रारम्भ में ही दिया था। न कि अब से दो-तीन हजार वर्ष पहले किसी दूत, पैगम्बर या गुरु ही को दिया हो। इसलिए मनुष्यमात्र के लिए सृष्टि के प्रारम्भ में दिया हुआ ईश्वरीय ज्ञान केवल वेद ही है, अन्य कोई नहीं।

वेद एवं वेदानुकूल ग्रन्थों को न पढ़ने-सुनने से आज मनुष्यों में बहुत भ्रान्तियाँ हैं। जैसे कि इस सृष्टि को हम मनुष्य कभी पूरी तरह नहीं जान सकते। जब हम इसे पूर्णतया जान नहीं सकते तो फिर बना भी कैसे सकते हैं ? और ऐसी व्यवस्थित एवं विज्ञानपूर्ण सृष्टि अपने आप भी नहीं बन सकती। फिर हम क्यों किसी व्यक्ति, पीर, पैगम्बर, दूत, मूर्त्ति, तस्वीर आदि वस्तु को ही ईश्वर मानते हैं ? जो स्वयं अपना निर्माण, जीवन व रक्षा आदि करने में असमर्थ है, वह परमात्मा कैसे हो सकता है ? जबकि इस सृष्टि को जानना, उत्पन्न करना, इसका पालन व प्रलय करना आदि कार्य वें कैसे कर सकते हैं ?

अतः जिसने इस सम्पूर्ण सृष्टि को अपने अनन्त ज्ञान-विज्ञान व सामर्थ्य से उत्पन्न किया है और जो इसे उत्पन्न करके सतत धारण कर रहा है। वह हम सब मनुष्यों और सृष्टि के पदार्थों से उत्तम ईश्वर ही है। जो हम सबके भोग व मोक्ष के लिए सृष्टि की रचना करता है और इसके प्रारम्भ में अपना सर्वोत्तम वेदज्ञान भी देता है।

हम सबके जीवन में शुद्ध, सत्य ज्ञान का महत्त्व सर्वोपरि है। बिना सत्य ज्ञान के हम मनुष्य कभी किसी वस्तु के विषय में सही विचार नहीं कर सकते। फिर बिना सत्य जाने उसका सदुपयोग भी नहीं कर सकते। इसलिए हमें अपने से सम्बन्धित वस्तुओं को ठीक-ठीक अवश्य जानना चाहिए। तभी हम दुःखों से छूटकर अत्यन्त सुखी हो सकते हैं और यही हम सब चाहते हैं। अपनी इसी इच्छा को पूरा करने के लिए हम सारे मानसिक, वाचनिक व शारीरिक प्रयत्न करते हैं।

हम सब मनुष्य सदा सुखपूर्वक रहना चाहते हैं, हममें से कोई भी कभी दुःखी रहना नहीं चाहता। जब ऐसी बात है तो हमें केवल अपने सुख का ही ध्यान नहीं रखना चाहिए बल्कि सबके सुख को भी ध्यान में रखना चाहिए। जब हम केवल अपने ही सुख की परवाह करते हैं, अपने सुख के सामने अन्यों के सुख-दुःख की परवाह नहीं करते। तभी हम अभिमान, स्वार्थ, पक्षपात, अन्याय आदि अधर्मयुक्त हो जाते हैं। जो अपने सुख-दुःख के समान सबके सुख-दुःख को देखता है वही धार्मिक व्यक्ति होता है। उसका यही धर्म उसका तथा सबका सुख बढ़ाता है। क्योंकि धर्म ही सबके सुख का कारण होता है, अधर्म नहीं - 'सुखस्य मूलं धर्मः।'

हम सब तभी सुखी रह सकते हैं कि जब हमारा ज्ञान बिल्कुल सही हो। हम सब मनुष्य अधिकतम या पूर्ण सुख पाने के लिए सदा प्रयत्नशील तो रहते हैं। किन्तु संसार के, अपने व ईश्वर के उस सत्य स्वरूप को नहीं जानते जो वेदों तथा वेदानुकूल शास्त्रों में वर्णित है। यदि ईश्वर सृष्टि के प्रारम्भ में हम मनुष्यों के लिए अपना वेदज्ञान न देता तो आज तक हम मनुष्य पशुओं के ही समान होते। तब हमारे पास मानव-शरीर, इन्द्रियाँ, भूमि, सूर्य, जल, वायु आदि बहुत-सी चीजें तो होती किन्तु मानवोचित-बुद्धि, भाषा व ज्ञान-विज्ञान न होता। ईश्वर ने हम मनुष्यों पर अपनी यह बड़ी अपार कृपा की है कि हमारे लिए अपना पावन वेदज्ञान उत्तम ऋषियों को दिया था। सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानवमात्र के ज्ञान-विज्ञान के सबसे प्राचीनतम पुस्तक यें चार वेद ही हैं - १. ऋग्वेद, २. यजुर्वेद, ३. सामवेद और ४. अथर्ववेद। इन चार वेदों से हमें सृष्टि के उत्पत्ति-पालन व प्रलयकर्त्ता परमेश्वर का सत्यज्ञान होता है। साथ ही सृष्टि व इसके अन्य कारणतत्त्वों का तथा हम जीवों के वास्तविक स्वरूप का भी यथार्थ ज्ञान होता है।

वेदों में सृष्टिकर्त्ता परमात्मा 'ओ३म्' ने मुख्य रूप से तीन तत्त्वों का सत्यज्ञान दिया है - १. ईश्वर, २. जीव और ३. प्रकृति का। इनमें से सबसे प्रमुख तत्त्व तो स्वयं 'ईश्वर' ही है। जिसके विषय में संसार में सबसे अधिक अज्ञान, भ्रान्तियाँ, अन्धविश्वास तथा आतंकवाद आदि समस्याएँ हैं। दूसरा तत्त्व 'जीव' या 'आत्मा' है। अपने वास्तविक स्वरूप से भी हम अनभिज्ञ हैं। और तीसरा तत्त्व 'प्रकृति' है। इनमें से हम प्रकृति से बने हुए

इस संसार को तो थोड़ा-सा जान लेते हैं किन्तु ईश्वर तथा जीवात्मा के अस्तित्त्व को तो प्रायः जानते ही नहीं हैं। ईश्वर के, अपने तथा प्रकृति के वास्तविक गुण, कर्म, स्वभाव को न जानने से ही संसार में अधर्म, अन्याय और दुःख बढ़ रहे हैं। हम इनके वास्तविक स्वरूप को जानकर ही सुखी हो सकते हैं, अन्यथा नहीं।

आदिकाल से हमारे धर्मात्मा, विद्वान्, योगी, ऋषि व अन्य जन वेदों को प्रमाण मानते रहे हैं, स्वयं को नहीं। किन्तु आजकल तो लोग अपनेझूठे-सच्चे विचारों को ही प्रमाण मानकर चल रहे हैं। वेद ईश्वरीय-ज्ञान के पुस्तक होने से स्वतः प्रमाण हैं। जैसे सम्मुख विद्यमान् सूर्य को बताने के लिए किसी अन्य प्रकाश-पुञ्ज की अपेक्षा नहीं होती, वैसा ही प्रामाणिक ईश्वर का वेदज्ञान है। जिसमें अविद्या-अज्ञान की एक भी बात नहीं है। प्रत्येक वेदमन्त्र परमात्मा का एक विद्या-विज्ञान से परिपूर्ण विचार है। जिनमें से कुछ मन्त्रों पर ही मनन-चिन्तन और अनुसंधान करने में ऋषियों ने अपने जीवन लगा दिए हैं। ऐसा सार्वभौमिक, सार्वकालिक व सार्वजनिक ज्ञान है वेद। ईश्वर, जीव व प्रकृति का जैसा स्पष्ट वर्णन हमें वेदों में मिलता है वैसा संसार की किसी अन्य ज्ञान-विज्ञान की पुस्तक में नहीं मिलता।

वेदों में सबसे अधिक वर्णन ईश्वर का ही हुआ है। क्योंकि ब्रह्म में ही यह सारा ब्रह्माण्ड समाया हुआ है। वेदों को हमारे महान् पूर्वज ऋषि आदिकाल से कंठस्थ करके सुनते-सुनाते और पढ़ते-पढ़ाते रहे हैं। वेदों को सुनने-सुनाने के कारण 'श्रुति' कहते हैं। कालान्तर में वेदों का पुस्तकों के रूप में प्रकाशन हुआ। हमें इन तीन तत्त्वों का सत्यज्ञान वेदों तथा वेदों के अनुकूल ब्राह्मण, दर्शनोपनिषद् आदि ऋषियों के ग्रन्थों से होता है। समग्र अस्तित्त्व को हम वेद आदि शास्त्रों से ही जानना सकते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के भी सत्यार्थ प्रकाश आदि पुस्तक वेदानुकूल होने से सत्यज्ञान में सहायक हैं।

Junior Arya Samaj

We have started a new initiative focussed on young children - Junior Arya Samaj. Under this initiative, children are motivated to learn something related to our vaidic culture and share the same with all.

This initiative was kicked off around our Varshikotsav 2019 where our young members were blessed by Acharya Akhileshwar ji and has been running successfully for over 3 months now with many children participating in the same presenting Vaidic Mantras and their meanings, Bhajans, prepared speeches on vaidic topics and shared their learning experiences with all.

The children have been encouraged by all and have also received some prizes from Arya Samaj for their efforts.

Some glimpses from the Junior Arya Samaj activities -

Gargi & Abhigyan

Rishika

Yukta Khemani

Om

Veda

Niharika Gupta

Arnav

Som - Sandhya Mantra

Aarushi

Future of our Arya Samaj - the Junior Arya Samaj participants

ईश्वर की प्रार्थना व उपासना

– रवि भटनागर

ईश्वर के सच्चे स्वरूप को जान कर पहचान कर उसके गुणों का गुणगान करते हुए उसके गुण, कर्म, स्वभाव को जानकर उसके अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव का निर्माण कर उस जगत् नियन्ता की वास्तविक प्रार्थना व उपासना करने के हम पात्र बनते हैं ।

प्रार्थना का अर्थ है माँगना । हम ईश्वर से प्रार्थी बनकर माँगे पर क्यों माँगे, क्या माँगे तथा कैसे माँगे ? ईश्वर दयालु है उसने हमको सब कुछ दिया है फिर भी यदि हम कोई अनुभव करते हैं तब इसका अर्थ यह है कि या तो ईश्वर ने जानबूझ कर हमें वह नहीं दिया और हम प्रार्थना करते हैं फिर भी वह हमें नहीं देता क्योंकि दयालु के साथ-साथ न्यायकारी है तथा हमारे कर्मों के आधार पर हम उस प्राप्ति के अधिकारी नहीं हैं । दूसरी स्थिति यह बनती है कि मूल से हमें वह प्राप्त नहीं है किन्तु यह संभव नहीं है क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है और उसकी व्यवस्था में कहीं कोई कमी नहीं भूल नहीं । फिर प्रश्न उठता है तब प्रार्थना क्यों ? वास्तव में प्रार्थना में हम अपनी इच्छापूर्त्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों में प्रार्थी बनकर ईश्वर की सहाय माँगते हैं क्योंकि ईश्वर की सहायता के बिना हमारे प्रयास सफल हों यह आवश्यक नहीं । हम किसी राष्ट्रीय प्रतियोगिता आई.ए.एस. आदि की पूरी लगन से तैयारी करते हैं किन्तु परीक्षा के समय अचानक बीमार पड़ जाते हैं या हम किसी राष्ट्रीय स्तर की खेलकूद प्रतियोगिता की तैयारी करते हैं पर अचानक चोट लग जाती है, फ्रेक्चर हो जाता है तब ईश्वर से प्रीति और स्तुति के साथ आत्मबल के लिए प्रभु सहाय आवश्यक है ।

किसान फसल बोता है । पूरी मेहनत करता है । निराई, गुड़ा, सिंचाई, खाद आदि सारी व्यवस्थाएँ योजनाबद्ध तरीके से करता है । सही योजना, पूरा परिश्रम, सभी उपायों के उपरान्त भी अचानक अतिवृष्टि हो जाती है या अचानक नीलगायों का झुँड आकर पकी-पकाई फसल को तहस-नहस कर देता है । किसी बात की कमी नहीं पर प्रभु सहाय नहीं । निश्चय ही सफलता के लिए हमारे प्रयासों के साथ-साथ प्रभु सहाय आवश्यक है । प्रार्थना से प्रभु सहाय उससे आत्मबल और इससे सहनशक्ति प्राप्त होती है तथा सकारात्मकता एवं सर्तकता बढ़ती है । प्रार्थना आत्मा की भूख है । उससे आत्मबल तथा आत्मविश्वास प्राप्त होता है ।

यह भी विचारणीय है कि प्रार्थना कैसी हो, जिसमें प्रभु सहायक हो ? सामान्य तौर पर जो प्रार्थनाएँ की जाती हैं वें मात्र औपचारिकता निभाने के लिए होती हैं । अपनी दिनचर्या के दौरान ही प्रार्थना को रस्म को पूरा कर दिया जाता है । कुछ लोग सुबह की सैर में तो कुछ स्नानादि करते समय प्रार्थना की रस्म अदायगी करते हैं । कुछ भागते-दौड़ते ही हनुमान जी से प्रार्थना करते हैं 'बेगु हरो हनुमान महाप्रभु जो कुछ संकट होय हमारो' इस प्रकार की प्रार्थनाओं का कोई औचित्य नहीं ।

कुछ लोग अपने निजी स्वार्थ की पूर्त्ति के लिए, अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए प्रार्थना करते हैं । आधि-व्याधि से छुटकारा, व्यवसाय में धनलाभ, परीक्षा में सफलता, पुत्र-प्राप्ति या समाज में प्रतिष्ठा अथवा चुनाव में जीत और फिर मंत्री-पद के लिए बड़ी प्रार्थनाएँ, बड़े-बड़े अनुष्ठान किए जाते हैं और फिर मन्नत पूरी होने पर प्रभु को रिझाने के लिए बड़ी-बड़ी घोषणाएँ, बड़े-बड़े संकल्प किए जाते हैं ।

कुछ प्रार्थनाएँ ईश्वर को चुनौति देने वाली होती हैं । जैसे 'प्रभु जी मेरे अवगुण चित्त न धरो' किसी बात को ईश्वर द्वारा चित्त में

धरने या न धरने वाली बात ही अर्थहीन दीखती है । ईश्वर न्यायकारी है, नीर-क्षीर विवेकी है, प्रत्येक को उसके कर्मों का उचित फल देता है ।

वास्तव में प्रार्थना स्वार्थ के लिए नहीं परमार्थ के लिए होनी चाहिए । मैं के स्थान पर हम होना चाहिए । 'प्रभु जी मेरे अवगुण चित्त न धरो' के स्थान पर 'हे दयामय हम सबों को, शुद्धताई दीजिए । दूर करके हर बुराई को, भलाई दीजिए ।।'' विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव । यद्भद्रं तन्न आ सुव ।।''वयं स्याम पतयो रयिणाम्''स नो वसून्या भर' जैसी प्रार्थनाओं में हमारे लिए प्रार्थना की गई हैं । महर्षि दयानन्द के अनुसार यें प्रार्थनाए ँ ही वास्तविक प्रार्थना की श्रेणी में आती हैं । वास्तव में यें वैदिक प्रार्थनाएँ हैं । केवल प्रार्थना से कार्य नहीं चलेगा वरन् प्रार्थना के साथ प्रयास भी आवश्यक है ।

अब प्रश्न उठता है प्रार्थना करें कैसे ? जब तक मन, वचन व कर्म से समर्पण का भाव नहीं आता, प्रार्थना वास्तविक प्रार्थना नहीं बनती । समर्पण का भाव आने पर ही हमारे आचार-विचार तथा व्यवहार में शिष्टता आती है । जब हम प्रार्थना करते हैं, हम तो प्रभु को देख नहीं पाते पर वह हजार आँखों से हमको देखता है, यह समझते हुए हमें सौम्य और शिष्ट बनना अनिवार्य है । प्रार्थना में जब सौम्यता, शिष्टता, निरभिमानता होती है तभी प्रार्थना तड़पन से युक्त वेदना भरी पुकार बनती है और उसी पुकार को ईश्वर को सुनता है । इस सम्बन्ध में कहीं एक कथानक पढ़ा था -

एक महिला सन्त ज्ञानेश्वर जी की साधना से प्रभावित होकर साधना करने लगी । पर पर्याप्त समय बीत जाने पर उसे कोई उपलब्धि नहीं हुई । तब वह सन्त से बोली - देव ! प्रभु बड़ा पक्षपाती है । किसी को सब कुछ देता है, किसी को कुछ नहीं देता । सन्त ने कहा - नहीं, ऐसा नहीं, प्राप्त करने के लिए पात्र बनना पड़ता है । पर महिला ने नहीं माना । दूसरे दिन सन्त ने महिला के पास एक भिखारी को यह कहकर भेजा कि इस महिला का हार माँग लो । महिला ने उसे दुत्कार दिया । तभी सन्त स्वयं महिला के पास हार माँगने पहुँच गए । महिला ने तुरन्त हार सन्त को दे दिया । सन्त ने पूछा - मुझको तो हार दे दिया पर उस भिखारी को नहीं दिया ? महिला ने कहा - वह इसका पात्र नहीं है । सन्त ने कहा - जैसे तुम पात्र को ही कुछ देती हो वैसे ही ईश्वर भी पात्र को देते हैं । प्रार्थना करने के लिए पात्र बनना आवश्यक है अर्थात् प्रार्थना करने के लिए समर्पण-भाव, निरभिमानता, विवेक, वैराग्य, तितिक्षा, शम व दम का होना आवश्यक है ।

प्रार्थना में क्यों माँगें, कैसे माँगें के बाद आता है क्या माँगें ? क्या माँगें का विस्तृत विधान वेदों में दिया है । ईश प्रार्थना का कितना सुन्दर वर्णन इस मन्त्र में है - त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभुविथ । अधाते सुम्नमीमहे ।। शिव संकल्प मन्त्र में हम प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु ! हमारा मन सदैव शिव संकल्प वाला हो ।

परमार्थ के लिए पूर्ण समर्पण भाव से, अत्यन्त विनम्रता तथा निरभिमानता के बाद प्रभु से प्रार्थना करने के लिए महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि के प्रारम्भ में प्रतिदिन की प्रार्थना-उपासना के नाम से आठ मन्त्र दिए हैं । जिनके माध्यम से प्रार्थना करते हुए हम अपनी कामनाओं को पूर्ण करने के लिए प्रभु सहाय प्राप्त कर सकेंगे, यह आशा ही नहीं वरन् विश्वास है ।

उपासना - उपासना का अर्थ है उप + आसन अर्थात् निकट बैठना । ईश्वर उपासना का अर्थ है ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करना या यूँ कहें कि पूर्ण ध्यानावस्थित होकर प्रभु से योग साधना । प्रश्न उठता है कि बिना उपासना के काम नहीं चल सकता ? सानिध्य प्राप्त करने की क्या आवश्यकता है ? यदि केवल स्तुति तथा प्रार्थना कर ली जाए तब क्या यह काफी नहीं रहेगा ? वास्तव में ईश्वर के सानिध्य से ही ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से हम अपने गुण, कर्म, स्वभाव सुधार सकते हैं । वायु जब सुगन्धित पुष्पों की फुलवरी या चन्दन के वन से होकर गुजरती है तब यह सुगन्धित हो जाती है और जब यही हवा मरे हुए जानवरों के पास से गुजरती है या गन्दे कचरे के ढ़ेर से होकर गुजरती है तब दुर्गन्ध के कारण साँस लेना मुश्किल हो जाता है । चन्द्रमा जब सूर्य के सानिध्य में होता है तब शीतल चाँदनी बिखेरता है और जब सूर्य के सानिध्य में नहीं होता तब अँधकार का साम्राज्य रहता है । इसी प्रकार ईश्वर सानिध्य पाकर हम तदनुरूप होने का प्रयत्न करते हैं । उसके सम्पर्क में आना चाहते हैं तो उसके सानिध्य के लिए उसके अनुरूप अपने गुण, कर्म, स्वभाव में सुधार करने पड़ते हैं । ईश्वर के सानिध्य से साधक निर्भय और संरक्षित हो जाता है । उसका आत्मबल बढ़ता है । कबीर कहते हैं -

कबीरा संगत साधु की हरे कोटि अपराध ।
संगत बुरी असाधु की आठों पहर उपाधि ।।

महर्षि दयानन्द ने ईश्वर स्तुति, प्रार्थना, उपासना के लिए आठ वेदमन्त्रों का चयन किया जो अनूठा है । इनका जो क्रम रखा गया है वह अत्यन्त महत्त्व का तथा अनूठा है । इसके अतिरिक्त गायत्री मन्त्र अतिश्रेष्ठ तथा विशिष्ट है । इसे सावित्री मन्त्र, गुरुमन्त्र भी कहा जाता है । महर्षि दयानन्द ने इसे महामन्त्र की संज्ञा दी है । इसमें ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना तथा उपासना तीनों का समावेश है ।

स्तुति - ओ३म् - निजीनाम, भूः - प्राणाधार, भुवः - दुःखहर्त्ता, स्वः - सुखदाता, सविता - सृजनहार, भर्गः - ऐश्वर्य देने वाला । प्रार्थना - धियो यो नः प्रचोदयात् - हमारी बुद्धियों को बुरे कामों से हटाकर अच्छे कार्यों की ओर प्रेरित करो । उपासना - वरेण्यम् - वरने योग्य, देवस्य - देने वाले, धीमहि - हम अपनी आत्मा में धारण करें ।

स्तुति, प्रार्थना, उपासना के लिए सबसे महती आवश्यकता है शुचिता, शुद्धता, पवित्रता, निर्मलता की और इसके लिए साधना की आवश्यकता है ।

Rituals Vs Spirituality

– Swati Gupta

It is said that

"MODERN AGE IS NOT OF RITUALS BUT OF BEING SPIRITUAL OR OF SPIRITUALITY."

It is a common observation that the modern generation does not like to perform rituals but is quite spiritually inclined. This raises questions on whether rituals and spirituality are independent, opposite, mutually exclusive or are they dependent as well as complementary to each other?

Lets understand the meaning of both terms Rituals and Spirituality -

Rituals (or Karma Kanda as said in Hindi) are a set of rules to be followed and accordingly rites and ceremonies are performed to attain a goal. There could be personal, family, societal, office level rituals for various activities. Example of one family ritual is that at night members tell stories to each other, or of an office could be giving a welcome party to every new joined etc. But here we are talking mainly about rituals which are related to religion and are performed as part of prayer to God and to attain a (spiritual) goal like salvation or moksha etc. **So, rituals are a set of activities performed by certain religion or sect as per the rules and regulations laid by an authority or a book/sayings of that religion or sect.** The higher goal of these rituals is to attain the goal of life as prescribed by their religion. The people following that religion or sect are expected to follow the rituals (generally strictly) and deviations are not taken in good spirits. These rituals can be good or bad as well as logical or illogical. The rituals in religion/sect context could also be defined as of two types - to be performed alone on Personal Level or in a Group of people in a function or during festivals and may vary as per the occasion being observed. Rituals may differ for genders and age wise also. Rituals without knowledge and based on blind belief will take us nowhere.

Spirituality (or Adhyatmikta in Hindi) on the other hand is **a very personal belief and conviction something which is related with Spirit or Atma. It has nothing to do with religion, sect, race, nationality, gender etc. transcendence these boundaries.** Every person (or Atma), comes

across some of these fundamental questions or thoughts at some point of time in his/her life, whose answers are always elusive, like - origin, reason and cause of the existence, purpose of life, what role I play in this vast universe, what and why is death, is there life after death, does God exist, what is liberation and way to liberation, why is there so much misery and injustice, why we have to go through all the pains, can pleasures be everlasting and above all WHO AM I ?.All such questions are the seeds of spiritual beliefs and make a spiritual person look for a more fulfilling life with acts of kindness, altruism, looking within, yearning for spiritual knowledge and practicing meditation leading to self-realization and enlightenment. Most spiritual people do believe in a higher authority or God, who is governing everything in this universe but may not necessarily be worshipping a particular god. However, there are atheists also who are highly spiritual and don't worship any God. Spirituality without any rituals is like a man in a room with all knowledge and logic but no tools to come out of the dark room and see the light.

Opposite or Complementary?

Since a ritualistic person may not have an iota of spirituality and on the other hand it is also possible that a spiritual person does not conduct any rituals. Hence it may appear at gross level that Rituals and Spirituality are two very different or rather opposite/ mutually exclusive ways to attain the goals of life.

- **Rituals Alone are like a person climbing the ladder without eyes and even when he reaches the destination, is not able to know he has found his goal.**
- **Spirituality Alone is like a person without limbs, who cannot climb the ladder to reach the goal at all but with open eyes keep imagining that he has reached.**

Hence there is a need to understand that **Rituals are an important means to attain the Spiritual Goal.** But today's youngsters and the so-called intellectuals moving away from performing any rituals or taking time out to understand their importance. This has literally created a vast gap between ritualistic and spiritualistic people and many a times leads to being judge-mental and arguments break between people of different ritual beliefs.

Reasons for society moving away from rituals - There are several reasons for this aversion of new generation from rituals and they are quite right.

1. Since rituals depend upon the religion/sect they belong to, and are differently observed or performed, thus lead to divisiveness between people on what is authentic and right ritual and at times leading to frequent fights since people think that their way is the only way and the right way.
2. Similarly, any ritual started with a very good intention initially may become obsolete or inconvenient to follow later due to changed living conditions with time or geography.
3. Also, many rituals which are followed blindfolded with no logical explanation are less likely to be appreciated by modern education logic-based generation.

Hence it is very important for all educated beings to question the rituals being followed in their spiritual quests, else they may get lost in doing fruitless activities with no results.

Unholy rituals - Rituals which do not create a positive and better feeling inside our heart, which harm others (like killing of animals), leads to wastage (pouring milk on idols), conducted without any logic (like being hungry for health of others) are meaningless rituals and should be got ridden of. These rituals are like weeds in the garden of spirituality and destroy the beauty of the meaningful logical rituals too. All the religions and sects should allow such rituals to be removed and others to be amended as per the requirement of time and geography.

The daring spiritual reformer - And precisely that is what was done by our Arya Samaj founder, Swami Dayanand Saraswati. At the tender age of 13 years, he questioned the baseless illogical rituals and rites performed at Shivratri celebrations in his village which led him to arise

as one of the greatest spiritual leaders of the world and of all times. His never ending quest for "True Knowledge or Truth" led him to many gurus and finally in Virija Nand he found one who poured in him the knowledge of Ved (The knowledge imparted by God to mankind covering all aspects of life, rituals, science, and spirituality). He analyzed all religions of the world and tried to understand their core beliefs and rituals and helped us in becoming aware of shortcomings of those rituals and how some of those are actually great hindrance in our path to spirituality and should be removed. And his **"Sacche Shiv Ki Khoj"** is a blessing to mankind.

Vaidic Rituals revival - We will be ever indebted to Swami Dayanand who revived the Vaidic rituals as performed by the rishis of ancient India and great men like Shri Ram and Shri Krishna of Aryavart. He re-introduced to the ignorant Aryas the lost glory of Vaidic times and exhorted us to perform regularly the five yagnas (Brahm, Dev, Pitr, Balivaishv, and Atithi) as rituals in their daily life to lead a balanced life. Dev yagna or agnihotrahavan is a perfect way of performing prayers generally in a group through the rituals of offering medicinal and good smelling herbs (which purify and disinfect the environment from disease causing germs) along with clarified butter to Agni (fire), chanting Vaidic Mantras and invoking various inanimate gods (jaz> devataa) with feelings of immense gratitude that everything belongs to the Almighty, Omnipresent, Omniscient God and nothing is mine. इदन्न मम् । **This community praying system of AgnihotraHavan along with Satsang is an excellent example of highly spiritual praying method based on simple and effective rituals meant for the well being of all animate and inanimate beings.**

Vaidic Sandhya - Beside this the greatest gift of Swami ji to us is methodology of doing Sandhya - the Brahma Yagna - in mornings and evenings (dawn and dusk) and is the most scientific and spiritual way of praying and meditating.The Vaidic Sandhya prescribed by Swami ji has just 17 mantras from Vedsand is based on Patanjali Ashtang Yoga - 8 limbs (Yam, Niyam, Aasan, Pranayaam, Pratyahaar, Dharnaa, Dhyaan, Samadhi).

यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान समाधयोऽटाङ्गानि । योगदर्शन साधन पाद - २९

यम-नियम-आसन-प्राणायाम-प्रत्याहार-धारणा-ध्यान-समाधि, ये आठ योग के अंग हैं ।

Vaidic Sandhya - An ideal combination of Rituals and Spirituality

In modern age when people have less time and are running around doing multitasking and want to achieve much, Vaidic Sandhya is most efficient and optimized way of spiritual prayers with logic based minimal rituals. Its beauty lies in

- Being a perfect combination of Karm (rituals), Gyaan (Knowledge) and Upasana (Prayer),
- It starts from first limb (Yam), reaching to eighth limb (Samadhi) of Ashtang Yoga, reciting the Vaidic mantras.

The method gradually takes the person from lower level of consciousness to higher levels,

- passing through all the three bodies(gross, casual and subtle),
- enlightening all the five koshas (Annamaya, Pranamaya, Manomaya, Vigyaanmaya and Anandmaya) within few minutes leading to meditative stage.

It is observed that the people who donot like to follow rituals but consider themselves as spiritual and are ignorant of Vaidic knowledge, start their prayer from limb number five -Pratyaahar (some even dare to do from limb seven - Dhyaana) to reach the last limb eighth - that is Samadhi in shorter time. And since they miss on initial limbs (which are like founding steps or like part of warming up to higher stagesand consider them as pure ritualistic actions), they never achieve Dhyaan and Samaadhistages and then feel depressed and lost, wondering where and how things are going wrong.

It is true that the first four limbs are ritual in nature, but they are the very foundation, making the body and mind stable and capable of allowing the Aatma to attain samadhi (stage). We can have spiritual well being only when first four limbs are followed

in our daily life, every moment, besides during Sandhya time. This will lead to a quick accession to other limbs during Sandhya and other times.

Lets see in little more detail how each of Sandhya Mantra is related to Ritual and Spirituality based on Ashtang Yoga.

1. आचमन मन्त्र –ओं शन्नो ..... It is done 3 times and has following 3 objectives -It comes under the नियम – शौच, clearing of throat with water from any cough/infection, and declaring the goal of Sandhya - which is is praying for the fulfillment of material desires as well as spiritual upliftment and happiness
2. अंग स्पर्श और मार्जन मन्त्र - Are in sync with the यम–नियम (Yam and Niyam)
3. आसन – The moment we sit in Sandhya, we get into a comfortable Asan for our body to allow other limbs or parts of Sandhaya to be performed without any hinderance
4. प्राणायाम मन्त्र – In sync with limb 3 Pranayaamand the mantra which can be recited doing pranayaam, minimum 3 times or maximum 21 times.
5. अघमर्षण मन्त्राः - In sync with प्रत्याहार (Pratyahaar)
6. मनसापरिक्रमा मन्त्राः - 6 Mantras -are in sync with धारणा (Dhaarana)
7. उपस्थान मन्त्राः - These mantras are in sync with-ध्यान (Dhaarana)
8. गायत्री मन्त्र: This mantra is chanted for longer duration during the samadhi stage taking the meditator from ध्यान to समाधि (Samadhi)

Lastly any prayer, any ritual and any level of spirituality is of no use if it does not invoke in oneself the yearning of self realization or knowing the Supreme Being in true form.

And as it is said in Yog Darshan, Samadhi Paad-Sukta 27 and 28 -

तस्य वाचका प्रणवः ।

तज्जपस्तदर्थभावनम् ।

God's name is ओ३म् and He should be worshiped knowing the meaning of His Name.

"मेरी होली मेरा गीत"

चल होली खेलें यार
चल ख्वाब रंगें इस बार

ख्वाब
सुनहरे भारत के
देश से भ्रष्टाचार मिटाने के
सदाचार अपनाने के
सत्य की ज्योति जलाने के

चल होली खेलें यार
चल ख्वाब रंगें इस बार

ख्वाब
रंगीले भारत के
देश से मंहगाई मिटाने के
स्वदेशी अपनाने के
स्वाभिमान की ज्योति जलाने के

चल होली खेलें यार
चल ख्वाब रंगें इस बार

ख्वाब
चमकीले भारत के
देश से गुलामी मिटाने के
स्वाभिमान से जीने के
पूर्ण स्वतंत्रता की अलख जगाने के

चल होली खेलें यार
चल ख्वाब रंगें इस बार

– पूर्वा आर्य

Arya Samaj and Hinduism

– Himanshu Agrawal

Hinduism is known as the eternal religion because it was always there. The world has, counting the big and the small, about three hundred religions. Yet, Hinduism is the only one whose founder is not known. The founders of all other religions are known. That is the reason, we ourselves called it Sanatan Dharma: The Eternal Religion. The truth is that we were not even called Hindus…our way of life did not have a name. But the river that flowed through our country and that acted as a bulwark against invaders had a name: Sindhu. The Persians had no pronunciation for the word Sa in their language. The closest sound they had was Ha and the river came to be called Hindu. Ours became the land of Hindus, or Hindustan.

The essence of Hinduism has always been individual freedom. It was never an organized religion. Someone could be born into a Hindu family and become a Mahavir. Someone else could be born into a Hindu family and become a Buddha. Hinduism does not have a centralized organized body to control things. There is no one sitting at the head of Hinduism, guiding things. There is no one to judge whether Buddha was authentic or not, whether Mahavir was authentic or not. A monotheistic religion like Christianity or Islam would have no place for a Mahavir or a Buddha. In contrast, Hinduism believes that every person has the capacity to develop his consciousness to the ultimate peak.

However good the way of life is, the religion is, a lot of non-essential clutter gets added up as time passes. Christanity is two thousand years old, Islam is a thousand and four hundred years old, Sikhism is five hundred years old. Hinduism,as the original religion, the SanatanDharma, and no one knows how old it is.

In the last one thousand years, hordes of invaders attacked India, one after the other. The Hindu society, an open, kind, generous and rich society became a victim of its virtues. The invaders were barbaric. This caused a deep chaos in society, and ushered in a period of confusion and despair. The riches were looted away, and the open and kind society gradually became closed and began to lose its confidence and faith. The nation got divided into sects and communities.The society gradually got steeped in superstition and rituals. This division went to an extent that some began to doubt if Hinduism was even a religion, given its absence of a Holy Book and a Prophet.

It was at such a crucial time that Maharishi Dayanand appeared on the scene and established the Arya Samaj, not as a sect or

separate religion but as the distilled and purest form of the Hindu Religion. He gave the concept of one God, and a logical and scientific view of Hinduism based on the Vedas. The Arya Samaj,as a movement, targeted to reform not just the religious aspect of the nation, but also its social, educational and political aspects. The Arya Samaj movement instilled in Indians a pride in their religionand paved the way for the rise of a national movement against the British rule in India.

President Radhakrishnan calledMaharishi Dayanand the "Maker of Modern India" while Swami Vivekananda placed him with Nanak and Chaitanya for ensuring Hindus weren't wiped out in their own homeland. Sri Aurobindo called him a "A Soldier of Light".

Some of the greatest Indians in the freedom struggle like Lala Lajpat Rai, Lokmanya Bal Gangadhar Tilak, Bipin Chandra Pal, Shri Arvind Ghosh, Bhai Parmanand, Bhai Shyamji Krishna Verma, Bhagat Singh, Ram Prasad Bismil, Bhai Bal Mukund, Veer Savarkar, Madan Lal Dhingra,Madan Mohan Malviya, Swami Shraddhanandand Pandit Lekhramand countless others were shaped by the Arya Samajphilosophy. The great historian K.M. Pannikar credited 80% of all freedom-fighters as being inspired by Arya Samaj. In 1931 a survey of all the jails of the country found that 80% of the political prisoners were Arya Samaji's.

The Arya Samaj movement began to revive the study of the Vedas and the worship of one God. Swami Dayanandrebuilt the entire Indian nation. He proved that in our Vedas there was no such thing as untouchability. He propagated against the curse of child marriages. Polygamy was also on the radar. With the existence of an omnipotent and omnipresent God, idolatry was no longer possible. Arya Samaj treats all people as born equal and does not accept a caste that one gets because of the accident of birth. Widow remarriages were encouraged, Sati was sought to be banned. Purdah was totally discouraged. Blind faith and superstitions were actively attacked. The concept of Shudhi helped bring back our brothers and sisters that we lost to other religions. Arya Samaj is the original reformer. Its influence has been endemic and it has touched the lives of all inhabitants of this great country.

One of the threats to religion in the last one century has also been science. Science has its own ways that are reliable and that keep building on acquired knowledge. Science is also growing at an exponential pace. Religion is falling far behind and requires an urgent update. Even in the west, places of worship are seeing lower and lower attendance as, under the onslaught of science, religion is not taken as seriously. The modern educated man is looking for answers and Christianity and Islam, two other major religions have already discredited themselves by their vague and irrational answers, elucidated so well by Maharishi Dayanand in the Satyarth Prakash. People continue to be Christian or Islamic more because of their birth and subsequent conditioning. Tested on the touchstone of truth and logic alone, Vedas and Arya Samaj are the only answer. Hinduism is the only religion where the timescales correspond to those of scientific cosmology, where the universe itself is supposed to have an infinite number of deaths and rebirths. As the world veers closer to science, a closer interaction with Hinduism is only to be expected. When we talk of a world interaction with Hinduism, we need to obviously consider the distilled version of Hinduism, as represented by the Arya Samaj. Only this can be of interest to the world, and not the Hinduism that has grown old carrying the burden of it's existence in the form of superstitions and social ills.We are also seeing a better practice of the concept of secularism in our country. The way secularism has been practiced in our country over decades, it seemed to give a license to the Christian and Islamic religious hotheads to hold sway.However, things are changing. The tweaking of policies to encourage minoritism, and to consolidate the minorities into a cohesive vote bank are gradually giving way. As Hinduism blooms and science and scientific temper makes inroads through education, its our version of Hinduism, as practiced by the Arya Samaj, that can be expected to pave the way for better tomorrow.

The General Body Meeting

The General Body Meeting of Arya Samaj Indiranagar Bengaluru was held on Sunday, March 10, 2019.

At this meeting, the activities report of the Samaj which was presented during the Varshikotsav 2019 was deemed as read and the accounts for the last two years were presented by Sh Amar Sharma ji.

Thereafter, members of the new Antarang Sabha were elected and the office bearers were elected unanimously.

The office bearers and members of the Arya Samaj Indiranagar Antarang Sabha are -

President - Smt Harsh Chawla	Member - Smt Soma Sharma
Vice President - SmtSneh Lata Rakhra	Member - Sh Ravi Bhatnagar
Vice President (Admin) - Sh Sandeep Mittal	Member - Smt Savita Aggarwal
Vice President (Dharmic) - Sh Narendra Arya	Member - Sh Ravi Yadav
Secretary - Smt Swati Gupta	Joint Secretary - Sh Lucky Khemani
Treasurer - Sh Amar Sharma	Librarian - Sh Shiv Kumar Agarwal
Invitees -	
Trust President - Sh Himanshu Agrawal	Trust Secretary - ShVivek Chawla

Some glimpses from the proceedings -

Varshikotsav 2019

Our Annual Festival - Varshikotsav 2019 was organized on Friday 25th, Saturday 26th and Sunday 27th January 2019. Renowned vedic scholar Acharya Akhileshwar ji kept the audience spell bound with his thoughts and famous bhajanopdeshak Sh Ravinder Kumar ji Arya mesmerised all with his bhajanopdesh. Like previous years, this year also, the event was webcasted live on our Facebook page. Please like and follow our Facebook page - www.facebook.com/asmiblr for all latest updates and events organized at Arya Samaj Indiranagar.

Some glimpses from the proceedings below -

All Varshikotsav sessions started with Agnihotra

Flag Hoisting on Republic Day

Our President Smt Harsh Chawla welcoming all to the Varshikotsav 2019

Bhajanopdeshak Sh Ravinder Kumar ji Arya

Acharya Akhileshwar ji

Acharya Akhileshwar ji being felicitated

Dr Ravinder Kumar ji Arya being felicitated

Next edition of Vaidic Dhwani being released

Our office staff being felicitated

Our learned pandit ji's being felicitated

Our President reading out the Annual Report of Samaj Activities

Smt Rsanjana Arya and Sh Narendra Arya announcing a donation of Rs 5 lakhs to setup an education sponsoship fund

Trust President Sh Himanshu Agrawal delivering the vote of thanks

A view of the audience in the Varshikotsav 2019

ARYA SAMAJ INDIRANAGAR

MANDIR OFFICE BEARERS

PRESIDENT
Smt. Harsh Chawla – harshsuraj@hotmail.com

VICE PRESIDENT
Smt. Sneh Lata Rakhra

VICE PRESIDENT
Sh. Sandeep Mittal – sandeepmittal5@gmail.com

VICE PRESIDENT
Sh. Narendra Arya – narendra.arya@gmail.com

SECRETARY
Smt. Swati Gupta – wantswati@gmail.com

JOINT SECRETARY
Sh Lucky Khemani

TREASURER
Sh Amar Sharma

LIBRARIAN
Sh Shiv Kumar Agarwal

EDITOR
Smt. Harsh Chawla

TRUST OFFICE BEARERS

PRESIDENT
Sh Himanshu Aggarwal

SECRETARY
Sh Vivek Chawla

TREASURER
Sh Narendra Arya

ACKNOWLEDGEMENT

Vaidic Dhwani acknowledges with thanks the Hindi typesetting by Dr. Arun Dev Sharma and the layout design by Shri Yashodhara S

ARYA SAMAJ MANDIR
7 CMH Road, Indiranagar,
Bangalore 560 038
Phone 2525 7756
asmiblr@gmail.com
www.aryasamajbangalore.in

Like us @ www.facebook.com/asmiblr
Join our Facebook group - "Arya Samaj Indiranagar Bangalore" for regular updates

Cover Page Mantra has been taken from Rigved and checked by Dr. Arun Dev Sharma

Vaidic Dhwani is a quarterly newsletter published by ARYA SAMAJ MANDIR INDIRANAGAR (ASMI), mailed free of cost to members and interested individuals. It is for private circulation only. To request a copy, simply mail us your complete postal address. *Vaidic Dhwani* is also available on the ASMI website **www.aryasamajbangalore.in**

Views expressed in the individual articles are those of the respective authors and not of ASMI. No part of this publication may be reproduced stored in a retrieval system, scanned or transmitted in any form or by any means electronic, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of ASMI.

SERVICES OFFERED

SAMAJ CONDUCTS AT MANDIR

- **Daily Havan** from 7.30 to 8.00 am
- **Weekly Satsang**
  comprising havan, bhajans and discourses every Sunday from 10 to 11.45 am. Every last Sunday of the month, the programme extends to special discourse and Preeti-bhoj.
- **Anna Danam Seva** - Hot Food distribution for all - Every second sunday of the month
- **Annual Festivals - Varshikotsav, Vaidikotsav, Gayatri Maha Yajna and Shivir**
  2-3 days of programmes of havan, bhajans, discourses and camps focussed on vaidic philosophy by renowned scholars conducted once every quarter

SAMAJ CONDUCTS AT MANDIR OR YOUR VENUE

Namkaran & Annaprashan
- naming & first grain

Mundan & Upanayan
- head shaving & thread

Vivah - marriage with certificate

Griha Pravesh - house warming

Antyeshti - funeral rites

Shudhdhi - reversion from other faiths to Vaidic dharma with certificate valid in court of law

Havan - for any ceremony on any occassion, at any place

Contact
1) Smt Harsh Chawla 99726 14241
2) Pandit Brij Kishor Shastry 97410 12159
3) Pandit Arun Dev Sharma 98446 25085

YOGA & PRANAYAM

- **Yoga** (Evening) - 45 days
  Time : Every Mon/Tue/Thu/Fri - 7.00 - 8.30 pm
- **Pranayam** - 11 days
  Time : Mon to Sat - 6.00 - 7.15 am (Morning)
  & 7.00 - 8.30 pm (Evening)
  Venue : Basement Hall
  Sri Nanjunde Gowda 98458 56204

MEDITATION

Manasa Light Age Foundation - Starting from first Wednesday of every month and every Wednesday
Time : 7 - 8 pm
Venue : Arya Samaj
080 28465280, 9900075280

MUSIC

- **Vocal**
  Time : Sat & Sun 2 - 4 pm
  Smt Seethalakshmi 96200 56218
- **Instrumental Music**
  Time : Tue & Sat 4.30 - 7.30 pm
  Sri N K Babu 98441 22738